राम जाने। जहां-जहां अनुमान था उसके हो सकने का, वहां-वहां हो आया हूं। उसकी कई सहेलियों के घर हो आया हूं, वह कहीं नहीं थी।''

''तुमने किसी पार्क में, किसी सिनेमा हाउस में, किसी कैफीटेरिया में ढूंढा उसे?''

''नहीं, इन जगहों पर तो मैं नहीं गया।''

''तो आओ चलें, हो सकता है किसी फ्रेण्ड के साथ किसी ऐसी ही जगह पर गई हुई हो।''

फटाफट उठकर जूता पहना कामेश्वर ने और पड़ोसी के साथ बाहर निकल आया।

''गाड़ी की चाबी मुझे दो, मैं ड्राइव करता हूं। तुम बहुत टैंस हो।''

बिना कुछ कहे पड़ोसी ने गाड़ी की चाबी उसे थमा दी।

उसने गाड़ी स्टार्ट की। शहर की काली-स्याह सड़कों पर सरपट भागती हुई गाड़ी ने बुद्धा पार्क, रोज गार्डन, कर्ण झील, हैगिंग गार्डन आदि का चक्कर लगाया। दोनों ने दो-चार कैफीटेरियाज़ के भीतर घुसकर झांका। मिनर्वा का शो खत्म होने तक की प्रतीक्षा करते सिनेमा हाल में से निकल रही भीड़ को आंखें फाड़कर देखा। साधना कहीं दिखाई नहीं दी। थक-हारकर फ़न-सिटी के लॉन में एक बेंच पर बैठ गए वे दोनों। पड़ोसी की हताशा अपनी चरम सीमा को छू रही थी।

''कभी पहले भी गई है इस तरह से?'' पूछा कामेश्वर ने। ''कभी नहीं। कहीं जाती थी तो फ़ोन पर बताकर जाती थी। घर लौटने तक कई बार फोन करती थी। मगर आज तो उसका मोबाइल ही आउट ऑफ रीच आ रहा है दोपहर बाद से।''

''उसका कोई ब्वाय फ्रेंड है?''

''कई हैं। हमने उसे पूरी लिबर्टी दे रखी थी। उसके क्लास-फ़ेलो ही हैं कई लड़के। उसके कुछ फ्रेंड्स हमारे घर पर भी आते हैं। वह भी जाती रहती है उनके घर पर।''

''यार, बुरा मत मानना, जवान-जहान लड़की को इतनी लिबर्टी नहीं देनी चाहिए थी तुम्हें।''

''क्या करें मित्र, ज़माना ही ऐसा आ गया है। हम सोचते थे कि पाबंदियों में रखेंगें तो चोरी-छिपे वह करेगी, जिससे हम मना करेंगे। इसलिए दे रखी है आज़ादी, लेकिन आज तो उसने हमारा विश्वास ही तोड़ दिया है।''

''जी छोटा मत करो, यार, मैं तुम्हारी परेशानी समझता हूं। तुम्हारी चिन्ता-दुश्चिन्ता का भी अहसास है मुझको, मैं तुम्हारे परिवार को अपना परिवार समझता हूं। तुम अगर सख़्ती नहीं कर सकते तो मुझे करनी पड़ेगी सख़्ती। मेरी भी तो बेटी है वह आख़िर।''

अचानक वाटर-फॉल की बगल के ट्रैक पर, एक लड़के के बाजू में बाजू डाले, टहल रही साधना पर नज़र पड़ी कामेश्वर की। उसकी उत्तेजना, क्रोधाग्नि में बदल गई।

''वह रही उस हरामी के साथ।'' उंगली से इशारा करते हुए कामेश्वर ने कहा और हठात् उठकर दौड़ पड़ा वाटर-फॉल की ओर। पड़ोसी उसके पीछे-पीछे उद्विग्न डग भर रहा था।

''साधना!'' लगभग चीखकर पुकारा कामेश्वर ने।

साधना ने उसकी ओर देखकर हाथ हिलाया, ''हाय अंकल।''

तुरन्त ही उसकी नज़र अपने पिता पर पड़ी तो वह एकदम घबरा गई। लड़के से हाथ छुड़ाकर वह तेज़-तेज़ कदमों से उन दोनों के पास पहुंची तो कामेश्वर ने आव देखा न ताव, एक ज़ोरदारा तमाचा जड़ दिया उसके गाल पर। उसके पिता की हालत तो ऐसी थी कि काटो तो खून नहीं।

पड़ोसी अंकल के नितान्त अप्रत्याशित, अभद्र, आक्रामक व्यवहार से चकरा-सी गई साधना।

''शर्म-हया है तुमको कुछ? दोपहर से तुम्हारे पापा ढूंढ रहे हैं तुम्हें। शाम से हम दोनों भटक रहे हैं जगह-जगह। कौन है ये लड़का।'' पूछा कामेश्वर ने।

''मेरा दोस्त है।''

''दोपहर से इसी के साथ हो?''

''हां... चेतन, इधर आओ।'' उसने थोड़ी दूरी पर खड़े किंकर्त्तव्यविमूढ़ चेतन को आवाज दी।

बूचड़खाने की ओर जा रहे बकरे की तरह घिसटता-सा बढ़ आया उन तक चेतन।

''पापा, ये चेतन है। प्रोफ़ेशनल आर्टिस्ट है।''

''आप चलिए चेतन जी। दोबारा आज जैसी हरकत की तो अपना पढ़ा-लिखा समझ लेना।'' पापा के व्यवहार में अप्रत्याशित तब्दीली देखकर साधना हक्का-बक्का रह गई।

''चलो साधना।'' पड़ोसी ने आदेश दिया बेटी को।

''बाय चेतन।'' कहकर बेटी पिता और अंकल के साथ चल दी।

गाड़ी स्टार्ट करते ही कामेश्वर की ज़बान फिर चल निकली।

''तुम्हें पता है कि आज तुम्हारे घर पर दोपहर का खाना नहीं बना। तुम्हारी मां का रो-रोकर बुरा हाल हो रहा है। ये भाई साहिब पचास बार रोते-रोते बचे हैं।''

''अंकल प्लीज, आपने मेरे साथ जिस क्रूरता का व्यवहार किया है, वह क्रिमीनल बीहेवियर है। आप हमारे फेमिली-फ्रेंड हैं, इसलिए मैंने अदरवाइज़ रिएक्ट नहीं किया। प्लीज़, फ़ार गॉड सेक, मेरी पर्सनल लाइफ़ में दख़ल देने का कोई हक नहीं है आपको। आई होप इट शुड बी क्लीयर टू यू।''

''ओके।'' कामेश्वर ने चुप साध ली और गाड़ी चलाता रहा।

बाप-बेटी भी चुप बैठे रहे घर पहुंचने तक। उनके घर के बाहर गाड़ी पार्क करके चाबी पड़ोसी को थमाई कामेश्वर ने और बिना उसके औपचारिक धन्यवाद की प्रतीक्षा किए अपने घर चला आया।

देर तक सोचता रहा वह सोफ़े पर लेटकर कि उसे साधना पर इतना क्रोध क्यों आया था। क्या केवल इसलिए कि वह पड़ोसी मित्र की बेटी थी और ग़लत रास्ते पर जा रही थी या इसलिए कि वह अगर किसी दूसरे लड़के के साथ रंगरेलियां मना सकती थी तो मेरे साथ क्यों नहीं। चेतन क्यों, मैं क्यों नहीं? ■